

आशा भक्त काथ
2719 I

श्री-अल्लारिषक विधि

146
Caudanaka.
vidui.

॥ ज्ञानविद्यासूत्र ॥

ॐ नमः श्रीचक्षुमहावायव्यधाय ॥ ॥ ज्ञापी ॥ थापक ॥
प्रतिरुवादमधुल ॥ पेचक्षालि ॥ कछनीगु ॥ पक्षसूत्रकानी
उयकीहिन ॥ कलस ॥ सद्यी ॥ मरु ॥ पात्र ॥ मकूत ॥ पक्षगर्व
खड्ग ॥ पाषा ॥ कर्हि ॥ आदि ॥ अन्नवाहि ॥ ध्वजप्रविक्रमनी
थापनायाय ॥ ॥ ज्ञापी ॥ लिचाय ॥ गुचमधुल ॥ पक्षग
र्व ॥ धन ॥ पक्षकूत ॥ आदिपूजा ॥ पविक्रमार्थधूनकाडा
जिसमाधि ॥ कलसाधिवासन ॥ मामकिपूजा ॥ दवताधिवासन
धूनकाडा ॥ इत्यापिखापूजा ॥ ॥ ध्वजधनीलिचक्रध्वजिन

मधुलप्रवक्ष्याय ॥ यथार्थं वाक्यं ॥ वाक् ॥ ॥
 ॐ प्रविसृष्टुगवन्महासखमाहुर्पूर्वसर्वसिद्धिसखपदं
 पञ्चमसखाहुर्मसिद्धर्थे ॥ इहैवैहाप्रसिद्धस्व ॥ ॥ स्नान
 मालाजानादाबलखाखन ॥ पश्चिमस्नानां ॥ ॐ बहाघाट
 यस्मयप्रवक्ष्याय ॥ धर्मलक्ष्मीवदुद्धावसेखन ॥ इहानवा
 नाडास्नानमधुलसखावयाय ॥ ॥ ॐ पञ्चमसखाभयसुललि
 तविलासममामिनमिधेनमामि ॥ इहैवैहाइहौं प्रसिद्धकृत्
 मौकुलिनाथहा ॥ नृत्तमृडाकास्यैथमेक्य ॥ ॥ हर्त ॥ मधुल
 कोत्तम

ले
 स्ववाक्यं ॥ ॥ आकाशमयादविद्रुत्तादनादिनिधन
 पञ्चः ॥ महावज्रसमयसत्त्वजडास्यवज्रप्रसिद्धमसर्वार्थम्
 महासिद्धिमाहेध्वर्यादिदेवगणसर्वज्ञधर्मावाजासिद्धिमपञ्च
 माहुर्नर्निर्दाषः ॥ अथैवमसि सर्वार्थान् नृणां गणैश्च नसि
 द्धिभिरुगवन्महानागममहावक्तुः ॥ अथैवमधुलधर्मोयथा
 दिमृक्कसुथागतः समनरुद्रसर्वात्मावाधिसत्त्वप्रसिद्धम् ॥ सर्वा
 रुममहासिद्धिः माहेध्वर्याग्रमूढया ॥ सिद्धिवज्रमहाकृष्णान्
 वज्रगर्णपतमम ॥ सर्वसत्त्वमनाव्यापिसर्वसत्त्वहृदिस्थितः ॥

५॥ चक्रेशमूर्तिमाचार्यप्रवेश ॥

सर्वसत्त्वपिण्डवैवकामाय समयायिनाः ॥ धनसत्त्वनरीहानेष्ट
पायात्सुमधुलेहनसत्त्वनमनार्थकामास्त्वीयनियन्तयत् ॥ ॥
कसर्ककन ॥ अतिविम्बसमागृहि ॥ ॥ मरुतकन ॥ तथेनात
त्वनिर्याताः ॥ अतिसत्त्वनमधुलेष्टविम्बसूनाशिष्याः सर्वपश्यन्
कर्मना ॥ अज्जनचूर्द्धकर्म ॥ धनपिण्डायाः सिष्यकमाकष्टन
कस्येगुचमधुलदनक ॥ मरुतपूजा ॥ विसर्जन ॥ ॥ शिष्यरा
वना ॥ स्वधर्मावमूर्खनप्रवेष्टावजां निर्गन्धप्रह्लापप्रस्थान
सहृदीकुकिवधहर्षोमूर्खनवृष्टोः सप्रह्लागथागर्गद्वीर

कं नृलिषिह्मात्तुष्टिचिह्नमहावाषडावपेनध्यायाहमधुलस्य
 पूर्वधावउपविहल्याचयेन ॥ ॥ निबोजनवडगावाःम
 नरुहाय ॥ पंचगव्यविय ॥ वल्ममधुलदायकपूजा ॥ धूनका
 डा ॥ ॥ गुर्वनेवकने ॥ रुगुशिष्यमर्कडोवडुवाकनमल्ला ॥ ॥ ॥
 सपूष्योडली ॥ ॥ हशिष्यप्रनिथथिगधर्मचर्यालायगुच
 कर्नेत्यडा ॥ अथवानिक्कइलसानेत्यडा ॥ अपालेदकसाने
 त्यडा ॥ मेधुलदयकेखानकास्यहाथुडाडलप्रीडाधानाडास
 न्यड ॥ ॥ नहिलाकयवाएदयाधेनापियनलीकेसूदया

१११
य ॥ कथं गतं कायं दसं प्राप्य मधुल प्रवेशकाय ॥ ॥ हसि
ष्यपि गच्छासं हलाकया नैमष ॥ पत्रलाकया नैमष ॥ किं
दुःखं याय कथं गतं कायं स्वका जंगल दलाय यात ॥ कथं नै
मधुल सदा हाडाय यात ॥ हसिष्यपि ॥ ॥ मृत्पूज्यं नैम
नक संक जादिरुयानकान् ॥ रुवाय नैमष उद्भूतं मधुल म
वत ॥ ॥ हनाथ हगन् ॥ किमि संधारव दनं ग ॥ सीय यात नैम
ष ॥ वृय यात नैमष ॥ कथं यात नैमष ॥ गच्छासं हलाकया नैम
षादि हि किमि गल आदि ॥ लीख स मय्यैकं स इनावानपि

यात रुय मन्वालक ॥ हनै स साव स मूड हाना नैमषादि पिथका
स्ये विष्कारं ॥ अर्थं किप नियात कथं कास्य विष्कारं नैमषादि प्रार्थना
याना ॥ ॥ हनाथ हगन् ॥ किमि संधारव दनं ग ॥ सीय यात नैम
ष ॥ वृय यात नैमष ॥ कथं यात नैमष ॥ गच्छासं हलाकया नैम
षादि हि किमि गल आदि ॥ लीख स मय्यैकं स इनावानपि
यात रुय मन्वालक ॥ हनै स साव स मूड हाना नैमषादि पिथका
स्ये विष्कारं ॥ अर्थं किप नियात कथं कास्य विष्कारं नैमषादि प्रार्थना
याना ॥ ॥ हनाथ हगन् ॥ किमि संधारव दनं ग ॥ सीय यात नैम
ष ॥ वृय यात नैमष ॥ कथं यात नैमष ॥ गच्छासं हलाकया नैम
षादि हि किमि गल आदि ॥ लीख स मय्यैकं स इनावानपि

पुनर्सेइतवाना एस्पविष्ठाइनधर्कशिष्यपनिस्सनेगुन्याकपा
र्थनायाह ॥ ॥ गुरुनेभय ॥ एहिबत्समहायानमलुचर्यान
येविधि ॥ दशयिष्मामिहासम्पकरीजनस्समहानय ॥ ॥ ह
शिष्यपिमहायानसंकुपनिआपो मलुचर्यायापराविधिइल ॥
॥ ॥ वृद्धिपेक्षसरुताकायवाकचिरुवर्जित ॥ सीप्राज्ञानम
उलंबजमलुप्ररावने ॥ ॥ हशिष्यपिगतभगवत्पिकायहा
नसबुपचिरुनेशनीववचनेधनयानायापराताडा वाकज्ञान
अतिउलंबदडाउथेमलुयाप्रराव ॥ ॥ मलुप्रयागमउल

यनरुग्महावल ॥ मानसेममहाधानेभक्मिहादिर्विले ॥ ॥
हशिष्यपनिधमलुयागगारुल्यमइगुथरुग्मयाकनववकनमा
लसेनपरुयकवअधीवपनिसनशीरुगवाननेधनयानावि
काकथासमानसेनपनिमनेइरुविव ॥ धवलसंशीभाक्मि
हआदिमलुयावलैऊपलपल ॥ ॥ लोकावृष्ट्यमागम्यचक
वरीसुनिर्विका ॥ कस्मात्सक्तिमिमीवत्सकुरुसर्वरूपाप्रयेत ॥ ॥
हशिष्यपनिगथधालसालोकयाअतुर्वीरुयागडायाडाधमेसेकु
प्रवरुनायाह ॥ धर्थवय्याकावतायाडाहशिष्यपनिधर्थरूपनि

निमज्जावसु विंय ॥ ओं सर्वगतगतनूरुनवाधालैकाववमुष्ट
 जामयसमूहसुनधसमयकं ॥ ओं वज्रवज्रकं ॥ ॥ धनव
 यगवलश्वीनकं ॥ हाथजालपेइकयन ॥ मधुलउयक ॥ ॥
 यथाकर्मभक्तिपूष्टिस्वाहिवानसिद्धिरुच्यतामयज्ञात्वा ॥ ॥
 मंष्ट्रदयनवज्रदक्षिणयका नयित्वा वज्रपद्मनृत्तमहिनयन ॥
 ओं कं रुट्ठिनिप ० सुदक्षिणयका नयित्वा सत्प्राधिशानमिति क
 र्यात्सधुर्ल ॥ ॥ धनपूष्याजनयाकं ॥ ओं हृदाहस्वानविय
 जाकानेहाथजालपेकयक ॥ ॥ ओं निष्टवज्रदक्षामहवक्ष

स्वनाथामहवह दयमऽधिकिष्ट सर्वसिद्धिमप्रयच्छ कैं हहहा
 ॐ ॥ खंवीचक्रं प्रतिकृत्स्नमौजलिनाथहा ॥ ॐ ॥ स्वनाथामह
 नाथ (क्षवजपूष्यप्रतिकृत्स्नमौजलिनाथहा ॥ ॐ ॥ स्वनाथामह
 धनमधुलपूजा ॥ दक्षिणाचार्यक ॥ मधुलकेनाडारवकन ॥
 स्वनाथकयाथासयागरवकन ॥ ॥ शिवायस्वयं धवाय
 पंकजिनरामहामूडासिद्धि ॥ ॥ वसुधात्मकपाल
 सैशकसाकडार्धमहामूडासिद्धिलाय ॥ ॥ वाचनमख
 वामलसिद्धि ॥ ॥ मिखाणिगलसैखालसैशकसामलसि

द्वि॥ ॥ उरुमीगडरुमा मधुमी गमधमा ॥ ॥ नृग
 लसीरुतसा उरुमे गृत्तिद्वि ॥ वामीरुतसामधुसिद्वि ॥
 ॥ अरुधरा गकिन्धुधर्म ॥ ॥ उरुसि रुतसारुतिरुतसिद्वि
 ॥ ॥ विम्वर्यातिरुचिवात्समीपक्षिप्रसिद्वि ॥ ॥ वाक
 नपिन दवनरुनरुतसारुतिरुतसिद्वि ॥ ॥ देवानोरुह
 कीयस्वस्थानकायादिविचरुतगोहृत्तव्य ॥ ॥ देवगधद
 कायाधमरुयूडागवधदवयाकाधमरुतगधदवयासिद्वि
 दयादेवतयानननयतिपततिगत्तुलैगस्यरावति ॥ ॥ ति

क्रदवया अरुनरुतसारुतिरुतसिद्वि ॥ ॥ पयवव
 वहिः पागनयनः द्विपदाविरुयेयावत ॥ ॥ पयवव
 नरुतसारुतगयकस्वपाल अरुधक ॥ ॥ रुतवहियागडसिद्वि
 ॥ ॥ उरुधरुपिनरुतसारुतिरुतसिद्वि ॥ ॥ वाक्कवर्तुल
 वयासुवाहवजावलिवाहि इधनास्ति सिद्वि ॥ ॥ धर्पिनिवाक
 लयासवजावलिसेहालावलिमं धर्पिनरुतसारुतिरुतसिद्वि मड
 ॥ ॥ मधुलीयसुदरुयकिकिन्धुमाउककथयिवावहि
 प्रवहनीय ॥ ॥ रुतधधिकनमधुलस्वयमडमलुमाउरु

ककनाडा पिनिनाडा यमाल ॥ ॥ इंदुनक्षत्रलेपः ॥
 झावेगनसीधर ॥ सर्ववृद्धकूलजामुद्रामल्लेयद्विदिता ॥
 ॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक
 लसीजानल्लमद्रामल्लनजधिशानयार्ग ॥ ॥ सैप्रदासर्वसिद्धि
 नीसमया ॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक
 नृ ॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक
 लायुग हर्नवडा यप्रडा मनोहर्षनैवानगूमल्लकमिसनजा
 नाधनायाडाधर्कगुनैआहादयकलै ॥ ॥ धनविषय

॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक

भायक ॥ वज्रमल्लमहामल्लपविशह ॥ यागमल्लमहामल्ल
 लैदक्षिणाह ॥ गजमल्लमहामल्लदीक्षिताह ॥ ॥ हनाथ
 हयवृद्धिमिसनै वज्रमल्लकडाधैमहामल्लसुद्धाहाडायधन
 हर्नयागमल्लकडाधैमहामल्लयादहनलायधन ॥ हर्नहगु
 वृहनाथगजमल्लयादिकादिमिसनकायधन ॥ हाहाहाहा
 ॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक
 प्रधदनकडाधैगमहामल्लगधलाह ॥ ॥ अनेककल्यकादिहि
 यकहैपापकैपूना ॥ ॥ हविष्यपिष्टमल्लस्य शुद्धायानाडा आठाकपनिवृद्धक

॥ ॥ अनेक कल्प काटि जन्म सजाया या नागूपाप दक्ष हूत ॥
॥ ॥ उत्सना इत्युक्ति कर्षा सर्व इष्ट खेसा सीरुवा ॥ यथा चर्यवेन
क्षस्मि मति अनूस्मि निर्मला ॥ ॥ धनमश्रुत धनमा पुनर्न आ
शन वकर्षे डान मूम्बाल समस्त इष्ट खे हूत ॥ हर्नै गव वल सीध व
र्या धल लपल सा वृद्धि दा विकर्नै हिन ॥ हर्नै वृद्धि वन निर्मल इ
यु ॥ ॥ अय यूपमारि च दुबाल दल लाल महात्म हि ॥ यन यूप
क्रिने ॥ सर्वे स पृष्टे विहसा सने ॥ ॥ हर्षिष्यपनि अडा कप
निसकल नाहुत्य मङ्ग पदलात ॥ थूगू पुन्य या प्रलावर्नै गडा

धनमहापुत्र पशुल गल्लि कपनि धर्षि गू आगम सगथा गतया
पूजुल पशुल ॥ ॥ सर्वपनि गहीना च ज्ञायमाना महात्म हि ॥
कन यूप महायान सजाती हि विष्यथ ॥ ॥ हर्षिष्यपनि क
पनि गृह सज्जन्म कायाया महायान या सूजा गि लम्बाना धानाया
सारुल पशुल ॥ ॥ अष मार्ग वन धीमान् महायान महादय ॥ य
न यूप गमिष्यति रुविष्यथ तथ गत ॥ ॥ हर्षिष्यपनि ध्या
मार्ग शिष्य हि गू कन उत्पद्मि यथा रीगु ॥ गू कन कडा धन ॥ हर्नै ग
गल्लि कपनि डानिडा उगल्लि लन कपनि कथा गत इयू डा थूका

धक गूडने आरुदयकली ॥ ॥ धनस्नानविय ॥ उं प्रतिग
 कर्त्तुमिमावत्समहावलकियत ॥ ॥ जूतिमास्तारिषकविधि ॥
 धनशिष्यानयानयगुलिस्वलिधाय ॥ आसेषदिगूनुआदिन
 लायाडाशिष्यस्वन गूनुमधुलदनक ॥ अरुधना ॥ वाधिव
 जनबुझानोयथादरुमहामह ॥ ममापि ज्ञाननाथयखवडादि
 दराहिम ॥ ॥ रुनाथरुगूनुवाधिवजनवूडपुण्यनिसुगाथ
 अरिषकविल ॥ अर्थेडिपिनकाकयकयाकखवडादिविमाथ
 डिपनिसुचिस्यविकारुन ॥ ॥ रुवना ॥ गुरुवडासालिषिता

॥ रुधमरिषक ॥

सुदलकमलापविचउसूर्यउपविधर्षिष्यसपत्नीकैवजधव
 पुर्णविराव ॥ अ. पा. नि. ला. ॥ ॥ वूडनामरिषकतुज
 गजाधयवजिधर्ष ॥ गूधमकनायथादरुसुथाददधमस्यहि ॥
 ॥ ॥ रुनाथरुगूनुवूडपुण्यनिसुगाथअरिषकविलथर्थे
 सावउझानयावकेयाकगूधमकवआचार्यगथवियाडाविकारु
 अर्थेडिपनिसुअरिषकविस्यविकारु ॥ ॥ धनपडापाय
 यामादनापलावकीडासीवसदिवकीकय ॥ रुवना ॥ गुरुथ
 गुरुधपडासमापनेमहावागधडवीरुयवेनावनदावधमक

निर्वधस्वक्रमार्गेन निर्गन्तुं वेदवाप्यमरुतपवसिर्गोक्षिण्य
मदिति शुन्यतान्तवैरुं वज्रजातद्विदुः सपुत्रास्तु सखावच
धुमहावाषधनूपेक्षानसत्तारिन्नमहिषिं च ॥ पूतकुंभ
खादिमूर्तिरिः प्रभानिः ॥ ६४ ॥ गगधामापूर्य स्थिते लावनादिवि
यासहिर्गः ॥ ६५ ॥ ध्रुवमाका वज्रावादिगीतनृत्तपूष्यकृक्मा
दिव्यरिः ॥ ६६ ॥ कलकिसवयावर्जित वाधिविरामृत्तपूष्य ॥ ६७ ॥ कीर्तक
ललोक्तं शिष्ये प्रभानिः ॥ ६८ ॥ तमहिषिं च मानेयागिनीगधगी
यमानेगाज्जलगीतं ॥ ॥ अहिषकविय ॥ निपासाहातसह

संस्कृत-महाकाव्य
2719 I

ASHA ARCHIV

स्वेमिस्वापिस्येकाने ॥ वाक् ॥ इत्मेगर्लसकलसत्तुदिस्थितः
 स्यसर्वात्मकस्यवनधर्मकृताधियस्यनिष्ठः सत्तुजनकस्य
 महासूखस्यकस्यल्लेखवैदुक्तप्रवमाहिषके ॥ लक्ष्मीध्वज
 कीचनपर्वगाहमिल्लकनाथमिमलप्रहिर्तेवज्ञाविवर्जोवृज
 पदनेर्ज ॥ कस्यल्लेखवैदुक्तसैनिकवर्गवाय ॥ कनापदिष्ट
 प्रवनस्त्वकीव्यख्यातमिल्लकिनवदवपूयधर्माहूमः सैनिक
 करंप्रज्ञानो ॥ कस्यल्लेखवैदुक्तसैनिकवर्गवाय ॥ स्वर्ग
 यूकः कस्यल्लेखवैदुक्तसैनिकवर्गवाय ॥ स्वर्ग

प्रवनागधर्मा ॥ कस्यल्लेखवैदुक्तसैनिकवर्गवाय ॥ स्वर्ग
 मेगलगाथा ॥ ॥ वाधिवैदुक्तसैनिकवर्गवाय ॥ स्वर्ग
 मापिजननार्थयखवकादिददाहिम ॥ ॥ हनाथहगववाधि
 वजनवद्वपूयपनिसुगथविलभूर्ध्वजिपनिवडाइयकमाक
 ववकादिनविशार्धजिपनिसुगथहदनेउयल्लिङ्गयाचानगः
 अहिषकविस्यविष्काकृत ॥ ॥ मातातपप्रज्ञानेयप्रज्ञाय
 यासादहाकयक ॥ ॥ स्वर्ग ॥ कस्यल्लेखवैदुक्तसैनिकवर्गवाय
 नेजागाकास्यहदिजनहम्यानीयज्ञानसत्वेयीकीरुतेद्वयमीप

॥ वाजिरुषक ॥

[illegible]

पै. लौ. घै. मुक्ति॥ ~~मूनिउदकारिषक॥~~ ॥ ~~किगगिना॥~~ मुक्ति॥
 आदर्शनज्ञानैरुविद्यामन्त्रजालअज्ञास्यः स्वरुर्वनयाध्याधना
 य॥ ~~हानीनारिषक॥~~ ॥ ~~अधमना॥~~ बाधिवजनवृद्धाना-
 यथादहमहमह॥ ममापिज्ञानतस्थयस्ववज्रादिंददाहिम॥
 ॥ ~~हनाथहं~~ नृवाधिवजनवृद्धपुरुषनिस्सुग॥ ~~अविलं~~ अ-
 र्थादिपनिबजाइयकयागवज्रादिनीविडाथमकुटाहिसकवि
 स्यविज्ञाइन॥ ॥ ~~रावना॥~~ शिष्याअः नत्नमैरुवनूपिनेज्ञान
 सत्त्वनैकीरुगेतहस्थः कथपगदवीरुईरुनेहिरिष्यमानैव

॥सकटादिधं॥

पवडादिदि १३ नूपमानियमाने मङ्गलगीतीकी वयक ॥ वडाधि
 पतिनाम ॥ अकषयवेकनकनकबस्तुदिघटितनलसैरुववई
 तत्त्वरावेज्ञानसत्त्व नूपप्रयत्नप्रागे मधस्थितशिष्यचक्रवर्ति
 नवमध्याह्नमकुटैरस्यसि वसामधललाटपाद्वेददयमर्द्धि
 पृष्ठं च यथाक्रमे ॥ ~~मिसाहकसिधनचक्रायक~~ ॥ ॥ मव ॥ ॥ ओं
 रुगवती आविषय २ अस्याहदयं हं हं ॥ ~~धनमकुटनपुयक~~
 ॥ ॥ ॐ देवत्सर्ववृद्धानीये धातुवनमस्कृते युष्माके पूजनाथाय
 मकुटपंचकुलाह्वं ॥ ॥ ~~हसिप्यपिधमकुटइयगाथवा~~

नगुधालसा मस्तकधारागर्तं अवकप्रयुक्तमहायातः वां पि
 सतेन मस्का वयोनातडाग ॥ आडा कमिसे पूजा याकया कथम
 कुटै च मिसे पूजा धमकुटै पस्यै लिपक कुलसै च पिडा कइलै
 ॥ ~~काहियक~~ ॥ ॐ वडाधारा वी अरिषिकई ॥ ॐ सत्ववडी अ
 रिषिकई ॥ ॐ बलवडी अरिषिकई ॥ ॐ धर्मवडी अरिषि
 कई ॥ ॐ कर्मवडी अरिषिकई ॥ ॐ सर्ववृद्धवृणामहिम
 हाहानमकुटप्रतिकहा ॥ ॥ ~~हीरलीखनलायक~~ ॥ ॐ आ
 वजमकुटाहिसिच आसनकस्तमहा ॐ वज इष्यहा ॥ ॥ ॐ

सर्वरात्रात्ममाहूतालकावाऽहुनस्थितजहुनज्ञानसीदतीना
 कृदानवडा॥४४॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक
 गरावजहुनधायान॥ अहुनज्ञानेउत्पद्मियाउवािनचतवू
 केमषुअविनासीमषु॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज
 नवज्ञानीयथादरुमहामह॥ ममापिज्ञाननाथयखवजादिद
 राहिम॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज
 अरिषकविल॥ अर्थीहिनिनवजाइयकयागरववजादिदि
 डाथीहिपनिस्तुविदुन॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज

॥वज्रादिप्रकार॥

तस्वरात्राख्येदहिरवज्रप्रतन्मम॥ अविद्याथनतिरिच्यज्ञान
 प्राप्ताख्यमह॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज
 धलसाकाताज्ञानेउत्पद्मियावीगूगूगूवेनसजविज्ञान
 ह्युउगूवेनसज्ञानलायजिउगूअमखजकाडाअपनिस्तु
 नजाइय॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज
 अमिताहृदयेज्ञानसत्वाहिनेकत्वाखईवामितारुत्मकीवि
 चित्त॥ अरिषकमहावज्रग्यादि॥ ॥~~हृदिप्रतिममस्तु~~रावसीवानक॥ ॥वाधिवज
 केलाहादिमयेखजगस्येदजिह्वरुदत्तामूर्धवदाहिषिच

॥ ॥ **हृषिप्रपनि** अमाखड्डयुगधिगुंक्षलसानसुव
 प्रेयाडाधानगुपवमध्वननऊडाताहाहनऊनाडाविश
 कगुगथपूर्वकालसजूरिषकविलजितरूपनिसुखडाहि
 षकवियाइल ॥ ॥ **खड्डवियमनु** ॥ ॐ हनरमावयश्म
 वेडाऊनइलनखड्डइरुइ ॥ ॐ **किरुप्रारिषक** ॥ ॥ **सी**
धनुकई कारिषक ॥ ॥ **खवना** ॥ **शिष्येवधुमहावाप**
 धमुडथाप्रविशककानेधचमालव्य ॥ ॥ **हारुदिकर्तिका**
 तुनस्यासिडिहाहसुइयात् ॥ ॥ **हृषिप्रपनि** ॥ अमकईइ

युगधिगुंक्षलसाने सुवपुश्याधानगुदकामालगधदहलप
 डिडागुडरुमश्याडाधानगु. धधिगुकहिकारिषकडिनेरु
 पनिसुवियाइल ॥ **कर्तुवियमनु** ॥ ॥ ॐ **कर्तुवियमनु** ॥ ॥ ॐ **कर्तुवियमनु** ॥ ॥
 मानाधर्ममीमेकईरुयइरुइ ॥ ॐ **किरुप्रारिषक** ॥ ॥
 वाधिवऊनवुडानीयथादरुमहमह ॥ ममापिजाननार्थ
 यखवजादिदेदालिभ ॥ ॥ **हनाथरुग** ववाधिवऊनवुड
 पुडयनिसुअरिषकगथविल ॥ अर्थडिपनिनऊइय
 केयानखवजादिदिडाथेडिपनिसुपाडाहिरिषकविस्यविश

॥ **कर्तुवियमनु** ॥

॥ पाश्चात्तिष्ठक ॥

हन् ॥ ॥ **रावता** ॥ खंखज्जभाघसिद्धिन्पेज्ञानसत्त्वाहि
नै ॥ पाश्चात्तिष्ठकभाघसिद्धिपविनतां विराच्य ॥ ॥ तावदिमय
पाश्चात्तिष्ठकज्ञानसिद्धिर्नैयुक्त ॥ वामहस्तनदत्तापूर्ववदमहिषि (ख
ने ॥ ॥ **हस्तिकापि** नामपाश्चात्तिष्ठकगार्थिगभासा ॥ सिद्ध्या
मयज्ञ्याउत्तानगर्तनीतासैश्चकृष्ट्याउत्तानगुखडालाहा
ननज्ञानाउत्तानकगार्थवकालसग (थक्लिअर्थकमिक्तपा
श्चात्तिष्ठककिया ॥ ॥ **पुत्रयया** नामपाश्चात्तिष्ठकगमल ॥ उंगुक्त
कट्टकहस्तसर्वज्ञज्ञपाश्चात्तिष्ठकनवैधयश्महासत्त्वाधर्मसत्त्वा

॥ नामाहिष्ठक ॥

हा ॥ ॥ **शक्तिपाश्चात्तिष्ठक** ॥ ॥ **ज्ञाना** नामपाश्चात्तिष्ठक
क ॥ वामहस्तनदत्तापूर्ववदमहिषि (ख
या ॥ उंगुक्तकपाससर्वज्ञज्ञपाश्चात्तिष्ठकनवैधयश्महासत्त्वाधर्मसत्त्वा
नामाहिष्ठक ॥ ॥ **रावता** ॥ शिष्ये ॥ बहुमहावैधयश्महा
मूढयापवि (हातदाकानिधवमालीय ॥ उंगुक्तहिगवन
कृष्णवलसिद्धिर्नैयुक्त ॥ कट्टकपूर्ववदमहिषि (ख
नवैधयश्महासत्त्वाधर्मसत्त्वाधर्मसत्त्वा
दय ॥ ॥ **रावता** ॥ कदाहगवनीमूढयापवि (हातदा

॥ धर्मरिषक ॥

कान्तवचमावच ॥ ओं ह्रीं क्षीं वज्रसिद्धिं ह्रीं ॥ नर्वकृष्ण
ह्रीं दिथा गिनी नीना माहि पित्रक ॥ **वक्ति ॥** ॥ थन
यहमसमविय ॥ ॥ नुम मालो उदका मकुरा खड्ग पा
हम कक्रिया जायसु ह्रिषका चक ॥ ॥ **ह्रिषिका च मि**
रुद्रा पीले ह्रिषक ॥ १ ॥ पाजा ह्रिषक ॥ २ ॥ मकुरा ह्रिष
क ॥ ३ ॥ खडा ह्रिषक ॥ ४ ॥ पा ह्रिषक ॥ ५ ॥ नामा ह्रिषक
॥ ६ ॥ ध्वमना ह्रिषक च मिगला क आडा ध्वलि अह्रिषकला
ना च मिसेधवल पिगडा गधइल ॥ ह्रिषिका पि ॥ ॥ नलि

अह्रिषको क्रिया चर्या ननु याग भुवन व्याख्यान मल साधन ध्व
विकार वक्ति ॥ ॥ **ह्रिषिका पि आडा च य नि स्थित कि**
या या य चर्या या य मल स्थित आगा या य ग ॥ धने ग जाय ग
मल साधन य ग श्वक च मिग अहिका व या य इह लोभक ग
न न ह्रिषिका क आडा दय कल ॥ ॥ थन ग न ह्रिषिका य या
थ ह्रिषिका क मल दान विय इल ॥ ॥ ग न ध य ॥ द
ह्रिषिका य ग व न अस्मिन् नि हिता व श ॥ ॥ मल का
य या क ह्रिषिका य ॥ ॥ गृहिता हिम या र ग व न

मनिमन्निहिगारुव ॥ ॥ धनशिष्यनैजाययाकके ॥

॥ ॥ नैवत्वेयदेअहृष्टमहलप्यूनरा ॥ वकव्यमा

वैरुसमयागवर्थेति ॥ नवत्वेगृह्णन्वमनकवामागिवि

षमापविहवक्षकानवकर्मक्रियाकृतानवकपकनस्याह ॥

॥ ॥ हशिष्यपनिचुमिस्पनध्व अचलाहिध्वकयागुरेव

दिङ्गामलाकपनियाङ्गडानिध्व रवज्ञायमहडा ॥ गवक्कनैऽ

धनइव ॥ डास ॥ तिसा ॥ अदि ॥ वियधकाठनि ॥ गथ

वानधकैकनिडा ॥ थथअथवानधकचपनिस्पनकनम

इ ॥ थथअथवाधक ॥ कनधसाहीविङ्गसस्वगथगारुआडा

दयकाडागडागइ ॥ कडावलनयाव्यथइयु वागनकयका

डाचपानेसु ॥ ॥ हशिष्यपि ॥ हनेगवूनध्वयाध्वमया

हधसानुसनेदिसेउकाठडार्थ ॥ वियनन्दहलपयकाडाग

पिडा ॥ हनेनवकसीकृत्तिकचगियइल ॥ ॥ थगुति

नकमिर्मसूयाङ्गडाननैज्ञायमइ ॥ गूफयानाकलसाःस्व

गडाभदपिडाथ्वक्कपवमइध्वनैवकायापिडाइलधकै

गवूनैचमिगआडादयकले ॥ ॥ धनलिसिहल

य ॥ वज्रनीधियक ॥ ॥ धनथकालियातमधुलथि
 लके ॥ किगगतक ॥ सताऊन ॥ कुमापन ॥ आशीर्वाद
 मगंधेलियक ॥ भारुनियक ॥ चिरूपूजा ॥ दकुध ॥
 दिगुसमय ॥ पथसालिलहियक ॥ समयाचक ॥ बिसई
 न ॥ वलियक ॥ गनवकु ॥ ॥ ॐ तिथी अचला
 हियकविधिसमाप्तम् ॥ ॥ १०४० ॥
 लखतवाहालयावगचोर्ग्यनारुधनकस्य द्रष्टव्यकादि
 धननीलिरापिनाइल ॥ ॥

वैरोचन ॥ ५० ॥ १ ॥	रक्तदेवता ॥ ५३ ॥ ३ ॥
अक्षोभ ॥ ५१ ॥ २ ॥	वृषदेवता ॥ ५४ ॥ २ ॥
तत्त्वभव ॥ ५२ ॥ ३ ॥	सक्तदेवता ॥ ५५ ॥ १ ॥
अमिताभ ॥ ५३ ॥ ४ ॥	रंगदिदेवता ॥ ५६ ॥ ४ ॥
अमोघसिद्धि ॥ ५४ ॥ ५ ॥	मध्यः हृषाभिलाषदेवता ॥ ५७ ॥
पंचवृद्धविशुद्धि ॥	पंचधातुविशुद्धि ॥

चटासहोषणा उपाय ॥ द्वेषवृद्धि प्रज्ञा ॥
 कष्टाचल उपाय ॥ वज्रजोगिति प्रज्ञा ॥

१ अक्षलाहि श्वक विययाक श्वयथायगुधलक
दिक्काशपिं न शसा न हस्य पूजायाना आ विय
दिक्का मश्वपिं शसाः पक्षे सा लिङ्ग क शूल
आदि अक्षन वाहि कलसं सद्यं मन पक्षे गर्व
पात्र वज्र घट्ट मकन खड्ग पात्र कर्त्ति घट्ट
गून् माणा उपाध्या स्वस्म सयान गून् मछल समा
विधापलापमाल माणाया पात्र उपाध्याया
पूक्तकनया धापना मालिचास्य गून् मछल दनं कमध्यं

पूजाया ॥ दिक्का श्वपिं शूल सा सिध्यपनि सुकलं धना
अनाय अक्षन जानका अनाया अगून् नवाम जानू
निम्नयाना अक्षपिं न शसा अना गून् या आसम
सयास ॥ अक्षक काय अक्षीवाद दक्ष पति कागय
कं वाक् पूजा मछल थिल कित न अक्षीवाद सद्यं
नय महनी छाया चिरु पूजा दान खन सिद्धि जाना
पक्षे सा लिगास समया चक्क संहान विसर्जन

दिङ्ममश्मानिन्मयायम्वा पञ्चसालिग्रामयाथ
समयायक कुलो गद्यक गीतमाकाहल
कलखक्यायमाला॥ ॥ शुभम् ॥ ॥